129

ISSN-2231-3885 Samved

संवेद

अगस्त 2026, मूल्य : ₹ 150

मिथक और वर्तमान सरोकारों की बुनकर मीरा कांत

ISSN-2231-3885 SAMVED
पूर्व समीक्षित पत्रिका

संवेद-129

अगस्त, 2026

सम्पादक : **किशन कालजयी**

सहायक सम्पादक : **आशा**
रत्नेश सिन्हा
दिव्यानन्द

सम्पादकीय सम्पर्क
बी-3/44, सेक्टर-16,
रोहिणी, दिल्ली-110089
मो. : +918340436365
samvedmonthly@gmail.com

आवरण : शशिकांत सिंह

वितरक
रचनाकार पब्लिशिंग हाउस
डी-18, स्ट्रीट नम्बर-9, जगतपुरी एक्सटेंशन
शाहदरा, दिल्ली-110093

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक कुमकुम कुमारी द्वारा
बी-3/44, सेक्टर-16, रोहिणी, दिल्ली-110089
से प्रकाशित और लक्ष्मी प्रिंटर्स, 556, जीटी रोड,
शाहदरा, दिल्ली-110032 से मुद्रित।

इस अंक का मूल्य : एक सौ पचास रुपये

सम्पादन : अवैतनिक
लेखकों के व्यक्त विचारों से सम्पादक या प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
पत्रिका से सम्बन्धित समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अन्तर्गत विचाराधीन।

संवेद -129
अगस्त, 2026

ISSN-2231-3885
पूर्व समीक्षित पत्रिका

अनुक्रम

मिथक और वर्तमान सरोकारों की बुनकर मीरा कांत

संवेद्य

किशन कालजयी : इतिहास, स्मृति और प्रतिरोध की समकालीन चेतना 6
आशा : अतीत और साहित्य का संवेदना घर 13

नाट्य-संसार

राजेश कुमार : असंगत नाटककार का पुनर्पाठ 18
रमा यादव : रंगमंचीय सरोकार और नाट्यधर्मी नवाचार 23
अनीता देवी : सामाजिक परिप्रेक्ष्य में स्त्री-अस्मिता का प्रश्न 31
राजकुमार : पर्दे का भीतरी सच 40
कुसुम लता : स्त्री जीवन की सम्भावनाओं का 'ईहामृग' 44
ऐश्वर्या झा : नेपथ्य से प्रत्यक्ष आने का प्रयास 50
हर्षबाला शर्मा : स्त्री चुप्पी को आवाज देने वाले नाटक 54
बीरेंद्र सिंह : जीवन और मृत्यु की दुःख भरी दास्तान 61
राजबीर वत्स : कश्मीर विस्थापन और 'काली बर्फ' 65
धर्मेन्द्र प्रताप सिंह : 'दिव्या' का नाट्य रूपान्तरण 72

निर्देशकीय वक्तव्य

राघवेन्द्र तिवारी : संवाद जो आत्मा तक उतर आएँ 80

विजय सोनी : 'नेपथ्य राग' की लोकप्रियता 82

भारती शर्मा : मिथकीय चेतना की मंचीय अभिव्यक्ति 84

नयन रघुवंशी : कानों में गूँजतीं वे तालियाँ 86

योगेश कुमार : एक अभिनेता के नोट्स 89

सुषमा शर्मा : स्त्री-प्रश्नों का चिन्तन और अभिलेख 96

कहानी-लोक

हरियश राय : इतिहास और वर्तमान के कथानक 98

निशा नाग : स्त्री जीवन का मर्म और संघर्ष 112

उपन्यास-जगत

मधुरेश : स्मृति और इतिहास के बीच 123

कमलेश वधवा : स्त्री मन के सरोकार 127

शहंशाह आलम : दिल्ली के बीते जमाने की दास्तान 137

देवेश : दरिया की कम्पन-कथा 142

बाल साहित्य

पूनम शर्मा : बाल मन की सरस कहानियाँ 152

साक्षात्कार

'अँधेरे समय में रचनात्मक अभिव्यक्ति हमारी चीख, विरोध या बेबसी होती है' 159

***मीरा कांत** से **धर्मेन्द्र प्रताप सिंह** की बातचीत*

इतिहास, स्मृति और प्रतिरोध की समकालीन चेतना

हिन्दी साहित्य की परम्परा में स्त्रियों की लेखन-यात्रा एक लम्बे आत्मसंघर्ष का इतिहास है जो सामाजिक न्याय के लिए टकराहट की आँच से तपती रही है। इस यात्रा में कई बार स्त्रियों को अपनी अस्मिता सिद्ध करने के लिए दोगुना प्रयास करना पड़ा। इसलिए उनकी जो भी उपलब्धि है, वह सहज अवसरों से नहीं, बल्कि निरन्तर जूझते हुए अर्जित पहचान से उपजी है। किन्तु जब कोई लेखिका अपनी दृष्टि, संवेदना और वैचारिक दृढ़ता से साहित्य की मुख्यधारा में विशिष्ट पहचान बना लेती है, तो वह केवल रचनाकार ही नहीं, समय की साक्षी और समाज की अन्तरात्मा भी बन जाती है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्त्री लेखन ने एक सशक्त परम्परा का रूप ग्रहण किया है। महादेवी वर्मा, अमृता प्रीतम और कृष्णा सोबती जैसी लेखिकाओं से लेकर गीतांजलि श्री, राजी सेठ, नासिरा शर्मा, अनामिका और मीरा कांत तक यह परम्परा लगातार विकसित होती रही है। इन लेखिकाओं ने स्त्री जीवन के गहरे अनुभवों, संघर्षों और अन्तर्विरोधों को शब्दों में ढालकर साहित्य को नयी दृष्टि दी।

मीरा कांत इस परम्परा की सिर्फ एक सशक्त कड़ी नहीं बल्कि चेतना और विमर्श का उन्होंने बिलकुल एक अलग भाषाघर बनाया है। कहानी से लेखन की शुरुआत करने वाली मीरा कांत ने नाटक की दुनिया में तो बड़ा मुकाम हासिल किया ही है, उपन्यास लेखन में भी उन्होंने गहरी प्रतिष्ठा अर्जित की है। आलोचना और शोध की दिशा में भी उनका कार्य महत्त्वपूर्ण है। उनकी यह बहुआयामी रचनाशीलता उन्हें हिन्दी की समकालीन साहित्यिक परम्परा में विशिष्ट बनाती है। उनके लेखन में भाषा की सहजता, कथ्य की गहराई और यथार्थ को देखने की प्रखर दृष्टि एक साथ मिलती है।

उनके पात्र स्त्री जीवन के विविध आयामों संघर्ष, आत्मसम्मान और बदलते समाज में अपनी पहचान रचने की बेचैनी को गहराई से व्यक्त करते हैं। उनकी रचनाओं में